Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

कक्षा 12 – हिंदी

मैराथन क्लास

पद्यांश आधारित प्रश्नोत्तर

रामधारीसिंह 'दिनकर' (अभिनव-मनुष्य)

सावधान मनुष्य ! यदि विज्ञान है तलवार,
तो इसे दे फेंक, तजकर मोह, स्मृति के पार ।
हो चुका है सिद्ध, है तू शिशु अभी अज्ञान;
फूल काँटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान,
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार,
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार ॥

1. पाठ का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश के पाठ का शीर्षक 'अभिनव-मनुष्य' है और इसके रचयिता (कवि) का नाम रामधारीसिंह 'दिनकर' है।

2. विज्ञान को 'तलवार' क्यों कहा है?

उत्तर- कवि ने विज्ञान को तलवार इसलिए कहा है कि यह किसी भी समय मनुष्य के लिए हिंसक (विनाशकारी) हो सकती है।

3. विज्ञान का प्रयोग करने में उसे शिशु समान क्यों कहा गया है?

उत्तर- मानव की क्रियाओं और उपयोग की पद्धति को देखकर उसे शिशु समाज कहा है।

4. पूरे पद में कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर- प्रस्तुत सम्पूर्ण पद में 'रूपक' अलकार है है।

5. रेखांकित पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- कवि बढ़ते वैज्ञानिक प्रयोगों के प्रति मानव को सचेष्ट करते हुए कहता हे कि विज्ञान व्यक्ति को नए-नए उपकरण दिए हैं, साधन दिए हैं, नवीन अस्त्र-शस्त्र तथा सुविधाएँ उपलब्ध कराई है। साथ ही विज्ञान ने विनाश की परिस्थितियाँ भी उत्पन्न की है। यदि मानव विज्ञान के साधना का दुरुपयोग करेगा तो वे ही

कल्याणकारी साधन मानव के विनाश का कारण बन जाएँगे। इसीलिए अभिनव मानव को सावधान करते हुए दिनकर जी कहते हैं कि हे मानवा तू विज्ञानरूपी तीक्ष्ण धारवाली तलवार से खेल रहा है। इस विज्ञान रूपी तलवार का मोह त्यागकर तुम इसे अपनी स्मृति से परे फेंक दे; अर्थात् इसे अपने से इतना दूर कर दे कि इसकी यादें भी शेष न रह जाएँ, क्योंकि यह किसी भी समय विनाशकारी हो सकती है। कवि दिनकर जी कहते हैं कि इस विज्ञान रूपी तलवार की धार बहुत पैनी (तेज) है। अज्ञानी होने के कारण तू विज्ञान की इस तलवार को हाथ में लेकर खेलने में सक्षम नहीं है। तेरी तनिक-सी असावधानी से, इससे तेरे ही अंग कट सकते हैं।

6. कवि मनुष्य को सावधान क्यों कर रहा है?

उत्तर- कवि मनुष्य को सावधान करते हुए कहता है कि हे मानव! तू जिस विज्ञानरूपी तीक्ष्ण धारवाली तलवार से खेल रहा है, यह किसी भी समय तुम्हारे लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकती है।

7. मनुष्य को अज्ञान शिशु क्यों कहा गया?

उत्तर- कवि ने मनुष्य को अज्ञान शिशु इसलिए कहा है कि इस विज्ञान के गुण-दोष के मध्य अन्तर कर पाने में अक्षम है। बिज्ञान का प्रयोग पूर्ण विवेक के साथ होना चाहिए क्योंकि विज्ञान यदि हमारे लिए वरदान है तो उसके गलत प्रयोग से वह अभिशाप भी बन सकता है।

8. किसकी धार बड़ी तीखी है?

उत्तर- विज्ञान रूपी तलवार की धार बड़ी तीखी है।

9. कवि ने भौतिकवादी और वैज्ञानिक युग के मानव को क्या चेतावनी दी है?

उत्तर- कवि ने भौतिकवादी और वैज्ञानिक युग के मानव को यह चेतावनी (दी है कि यदि तू अभी सावधान नहीं हुआ तो तुझे विज्ञान के दुष्परिणाम भोगने पड़ेंगे।

10. कवि ने तलवार किसे बताया है और इसका इस्तेमाल करने से मनुष्य को क्यों मना किया है?

उत्तर- कवि ने विज्ञान को तलवार बताया है और इसे मनमानी क्रीड़ा का माध्यम बना लेना स्वयं का नुकसान करना है। इसलिए इसके प्रचण्ड प्रभाव में आने के लिए मनुष्य को मना किया है

11. तलवार' शब्द के दो पर्यायवाची लिखिए।

उत्तर- तलवार' शब्द के दो पर्यायवाची हैं- खड्ग तथा कृपाण।

12.मनुष्य को किससे दूर रहना संगत है?

उत्तर- मनुष्य को विनाशकारी आविष्कारों से दूर रहना ही संगत है।

13. यहाँ मानव को किसका सन्देश दिया गया है?

उत्तर - मनुष्य को अत्याधुनिक हथियारों से दूर रहें की सलाह दी है, क्योंकि ये हथियार विनाशकारी हैं।

14.किसको फेंक देने में ही हित है?

उत्तर- विज्ञानरूपी तलवार का मोह त्यागकर मनुष्य को इसे फेंक देने में ही हित है।

आज की दुनिया विचित्र, नवीन;
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन ।
है बँधे नर के करों में वारि, विद्युत भाप,
हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।
है नहीं बाकी कहीं व्यवधान,
लाँघ सकता नर सरित, गिरि सिन्धु एक समान।

1. मनुष्य ने आज किस पर विजय प्राप्त कर ली है?

   उत्तर- वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप आज मनुष्य ने प्रकृति पर सर्वत्र विजय प्राप्त कर ली है।

2. किसके हुक्म पर पवन का ताप चढ़ता-उतरता है?

   उत्तर- वैज्ञानिक युग के अभिनव मानव के हुक्म पर पवन का ताप चढ़ता-उतरता है।

3. 'कहीं भी व्यवधान नहीं बाकी है' का क्या अर्थ है?

उत्तर- वैज्ञानिक प्रगति के कारण आज का मनुष्य इतना साधन सम्पन्न हो गया है कि उसके सामने किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं है। वह बिना किसी व्यवधान के सारी बाधाओं को लाँघ सकता है।

4. रेखांकित पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

उत्तर- रेखांकित पंक्ति का भावार्थ कवि दिनकर जी कहते हैं कि आज की दुनिया नवीन और विचित्र है। वैज्ञानिक प्रगति के परिणामस्वरूप आज मनुष्य ने प्रकृति पर सर्वत्र विजय प्राप्त कर ली है। वह इतना साधन सम्पन्न हो गया है कि प्रकृति को भी अपने अनुकूल बना लिया है। वैज्ञानिक युग में आज मनुष्य पूर्णतया शक्तिशाली हो गया है। सेज

5. कविता का शीर्षक तथा कवि का नाम बताइए।

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश के कविता का शीर्षक 'अभिनव-मनुष्य' है और इसके रचयिता (कवि) रामधारीसिंह 'दिनकर' हैं।

6. आज की दुनिया किस प्रकार है? पुरुष के हाथों में क्या बँधे हैं?

उत्तर- कवि का कहना है कि आज की दुनिया पहले से भिन्न, विचित्र तथा नवीन है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण आज के मानव ने लगभग समस्त प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। पानी, बिजली और भाप को मनुष्य ने अपने वश में कर लिया है; यानी ये पुरुष के हाथों में बंधे हैं।

7. 'चढ़ता-उत्तरता' में कौन-सा समास है?

उत्तर- 'चढ़ता-उतरता' में द्वंद्व समास है।

8. प्रकृति पर सर्वत्र कौन आसीन है?

उत्तर- मनुष्य प्राकृत पर सर्वत्र आसीन है।

9. सरित, गिरि और सिन्धु शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर- सरित- नदी , गिरि- पर्वत, सिन्धु- समुद्र।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

यह मनुज, ब्रह्माण्ड का सबसे सुरम्य प्रकाश,
कुछ छिपा सकते न जिससे भूमि या आकाश ।
यह मनुज जिसकी शिखा उद्दाम,
कर रहे जिसको चराचर भक्तियुक्त प्रणाम ।
यह मनुज, जो सृष्टि का श्रृंगार,
ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार ।
'व्योम से पाताल तक सब कुछ इसे है ज्ञेय'
पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय ।
श्रेय उसका, बुद्धि पर चैतन्य उर की जीत;

1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक और कवि का नाम लिखिए। उपर्युक्त।
2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या- कवि कहता है कि आज मनुष्य ने वैज्ञानिक प्रगति के बल पर इस संसार के विषय में सब कुछ जान लिया है। पृथ्वी के गर्भ से लेकर सुदूर अन्तरिक्ष तक के सभी रहस्यों का उद्घाटन कर दिया है। चाँद तारे, सूरज आदि की स्थिति को स्पष्ट कर दिया है कि आसमान में कहाँ और कैसे टिके हैं? पृथ्वी के गर्भ में जहाँ शीतल जल का अथाह भण्डार है, वहीं दहकता लावा भी विद्यमान है; उसके द्वारा यह भी ज्ञात किया जा चुका है। किन्तु यह ज्ञान-विज्ञान तो मनुष्यता की पहचान नहीं है और न ही इससे मानवता का कल्याण हो सकता है। संसार का कल्याण तो केवल इस बात में निहित है कि प्रत्येक मनुष्य प्राणिमात्र से स्नेह करे, उसे अपने समान ही समझे, यही मनुष्यता की अथवा मनुष्य होने की पहचान भी है,

अन्यथा ज्ञान-विज्ञान की जानकारी तो एक कम्प्यूटर भी रखता है, मगर उसमें मानवीय संवेदनाएँ नहीं होती; अतः उसे मनुष्य नहीं कहा जा सकता।

3. संसार और पृथ्वी का कोई भी तत्त्व किससे अज्ञात नहीं रह सकता?

उत्तर- आकाश और पृथ्वी का कोई भी तत्त्व अभिनव मनुष्य से अज्ञात नहीं रह सकता।

4. संसार के सभी जड़-चेतन पदार्थ किस कारण मनुष्य को प्रणाम करते हैं?

उत्तर- आज का यह अभिनव मनुष्य इतना बुद्धिमान हो गया है कि इसके यश की अदम्य-शिखा सर्वत्र शोभित है जिसे संसार के सभी जड़-चेतन पदार्थ शक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं।

5. 'आकाश' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर- 'आकाश' शब्द के दो पर्यायवाची शब्द हैं-नभ, शून्य।

6. मनुष्य की क्या विशेषता है?

उत्तर- मनुष्य की यह विशेषता है कि वह ब्रह्माण्ड का सबसे सुरम्य प्रकाश है।

7. मनुष्य का श्रेय क्या है?

उत्तर- असंख्य मनुष्यों से प्रेम करना मनुष्य का श्रेय है।

8. 'सुरम्य' और 'आगार' शब्दों का अर्थ लिखिए।

उत्तर- सुरम्य का अर्थ - 'अत्यन्त मनोहर और रमणीय'

'आगार' का अर्थ- 'रहने का स्थान, कमरा, कोठी, खजाना' है।

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

पुरूरवा

कौन है अंकुश, इसे में भी नहीं पहचानता हूँ ।
पर, सरोवर के किनारे कंठ में जो जल रहा है।
उस तृषा, उस वेदना को जानता हूँ।
सिन्धु-सा उद्दाम, अपरम्पार मेरा बल कहाँ है ?
गूँजता जिस शक्ति का सर्वत्र जयजयकार,
उस अटल संकल्प का सम्बल कहाँ है ?
यह शिला-सा वक्ष, ये चट्टान-सी मेरी भुजाएँ,
सूर्य के आलोक से दीपित, समुन्नत भाल,
मेरे प्राण का सागर अगम, उत्ताल, उच्छल है।

सामने टिकते नहीं वनराज, पर्वत डोलते हैं,
काँपता है कुंडली मारे समय का व्याल,
मेरी बाँह में मारुत, गरुड़, गजराज का बल है ।

1. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या-पुरूरवा कहते हैं कि मैं उस अंकुश या प्रतिबन्ध के विषय में नहीं जानता कि वह कौन-सी शक्ति है, जो मुझे अपनी प्यास बुझाने से रोक रही है। मेरी स्थिति उस व्यक्ति की-सी है, जो प्रेम सरोवर के किनारे बैठा है, किन्तु प्यास की पीड़ा से व्याकुल होने पर भी वह अपनी प्यास नहीं बुझा पाता। ऐसा क्यों होता है, यह मैं स्वयं नहीं समझ पाता। पुरूरवा का आशय है कि उर्वशी जैसी अनुपम रूपसी पास होने पर भी और स्वयं कामाग्नि से विह्वल होने पर भी वह अपनी कामना पूरी क्यों नहीं कर पा रहा है। सम्भवतया उसके सत्संस्कार उसे इस समाज विरुद्ध सम्बन्ध बनाने से रोक रहे हैं।

2. राजा पुरूरवा किससे अपने मन की दुविधाग्रस्त स्थिति का वर्णन कर रहे हैं?

उत्तर- राजा पुरूरवा अप्सरा उर्वशी से अपने मन की दुविधाग्रस्त स्थिति का वर्णन कर रहे हैं।

3. ऐसा क्या है जो राजा पुरूरवा को उर्वशी जैसी रूपसी के पास होने पर भी कामना पूरी करने पर रोक रहा है?

   उत्तर- राजा पुरूरवा के सत्संस्कार हैं जो उसे समाज के विरुद्ध सम्बन्ध बनाने से रोक रहे हैं।

4. उद्दाम और अंकुश शब्दों के अर्थ लिखिए।

   उत्तर- उद्दाम – निरंकुश, अंकुश – प्रतिबन्ध।

5. पद्यांश में प्रयुक्त रस व अलंकार का नाम लिखिए।

   उत्तर- रस- वीर, अलंकार- उपमा, रूपक, अनुप्रास।

मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ
मैं, उर्वशी! अपने समय का सूर्य हूँ मैं।
अंध तम के भाल पर पावक जलाता हूँ,
बादलों के सीस पर स्यन्दन चलाता हूँ।

पर, न जानें, बात क्या है!
इन्द्र का आयुध पुरुष जो झेल सकता है,
सिंह से बाँहें मिला कर खेल सकता है,
फूल के आगे वही असहाय हो जाता,
शक्ति के रहते हुए निरुपाय हो जाता।
विद्ध हो जाता सहज बंकिम नयन के बाण से,
जीत लेती रूपसी नारी उसे मुस्कान से।

1. रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या-नारी सौन्दर्य के सामने अपनी असहाय दशा को प्रकट करते हुए पुरूरवा कहते हैं कि आज न जाने क्यों मैं इतना शक्तिहीन हो गया हूँ। जो व्यक्ति इन्द्र के वज्र को झेल सकता है, सिंह को अपनी भुजाओं के बल से पराजित कर सकता है, वही पुष्प के समान सुकोमल नारी के सामने

असहाय हो जाता है। शक्ति होते हुए भी उसे कोई उपाय नहीं सूझता। शक्तिशाली और बलशाली व्यक्ति भी सुन्दरी की स्वाभाविक दृष्टि के बाण से घायल हो जाते हैं और सुन्दर युवती एक मुस्कान से उसके हृदय को जीतकर अपने वश में कर लेती है। अतः कवि इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को स्पष्ट करते हुए कहता है कि बड़े से बड़े शक्तिशाली पुरुष नारी की कटाक्ष चितवन के सामने नतमस्तक हो जाते हैं।

2. उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश 'रामधारीसिंह 'दिनकर' द्वारा रचित महाकाव्य 'उर्वशी' से हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'पुरूरवा' शीर्षक से उद्धृत है।

3. पुरूरवा उर्वशी को अपना परिचय किस रूप में देता है?

उत्तर- पुरूरवा उर्वशी के समक्ष अपनी सामर्थ्य का परिचय देते हुए कहता है कि मैं नश्वर मनुष्य की विजय का शंखनाद हूँ, समय को आलोकित करने वाला सूर्य हूँ, मैं अन्धकार के मस्तक पर अग्नि- शिखा प्रज्वलित

कर उसका विनाश करने में सक्षम हूँ। मैं बादलों के ऊपर अपना रथ चलाता हूँ अर्थात् मेरी गति सर्वत्र एवं बाधा रहित है।

4. पुरुष फूल-जैसी कोमल नारी के सामने क्यों असहाय हो जाता है?

उत्तर- पुरुष फूल जैसी कोमल नारी के सामने इसलिए असहाय हो जाता है क्योंकि बड़े से बड़े शक्तिशाली पुरुष सुन्दर युवती के तिरछी चितवन एवं मुस्कान के सामने नतमस्तक हो जाते हैं।

5. 'स्यन्दन' और 'आयुध' शब्दों का क्या अर्थ है?

उत्तर- 'स्यन्दन' का अर्थ 'रथ' और 'आयुध' का अर्थ 'शस्त्र' है।

6. हे उर्वशी मैं अपने समय का सूर्य हूँ । इस बात से क्या आशय है?

उत्तर- 'हे उर्वशी! मैं अपने समय का सूर्य हूँ' इस बात का आशय है कि जैसे सूर्य के तेज के सामने तारे फीके पड़ जाते हैं वैसे ही मेरे दुर्धर्ष तेज के सामने संसार के सारे राजा-गण निस्तेज हो चुके हैं।

उर्वशी

मेरे सम्मुख नत हो रहते गजराज मत्त;
केसरी, शरभ, शार्दूल भूल निज हिंस्र भाव
गृह-मृग समान निर्विष, अहिंस्र बनकर जीते।
मेरी भ्रू-स्मिति को देख चकित, विस्मित, विभोर
शूरमा निमिष खोले अवाक् रह जाते हैं;
श्लथ हो जाता स्वयमेव शिंजिनी का कसाव
संस्रस्त करों से धनुष-बाण गिर जाते हैं।

1. उपर्युक्त पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ-प्रस्तुत पद्यांश रामधारीसिंह 'दिनकर' द्वारा रचित महाकाव्य 'उर्वशी' से हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित 'उर्वशी' शीर्षक से उद्धृत है।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या-उर्वशी अपने भावों को प्रकट करती हुई कहती है कि मेरे सामने बड़े-बड़े मदमस्त हाथी भी सिर झुकाकर रहते हैं। सिंह, शरभ और चीते आदि सभी हिंसक पशु भी अपनी हिंसावृत्ति को त्यागकर मेरे समक्ष पालतू हिरन के समान बन जाते हैं। कवि के कहने का भाव यह है कि नारी के रूप एवं सौन्दर्य के आकर्षण के समक्ष बड़े-बड़े योद्धा नतमस्तक हो जाते हैं।

3. उर्वशी के समक्ष वीरों के धनुष की डोर की क्या दशा हो जाती है?

उर्वशी के समक्ष वीरों के धनुष की डोर ढीली पड़ जाती है और उनके काँपते हुए शिथिल हाथों से धनुष-बाण गिर जाते हैं।

4. उर्वशी को देखकर बड़े-बड़े वीरों की बोली क्यों बन्द हो जाती है?

उत्तर- उर्वशी के भृकुटि-संचालन को देखकर बड़े-बड़े वीरों की बोलती बन्द हो जाती है।

5. उर्वशी के सामने हिरन जैसे कौन बन जाते हैं?

उत्तर- उर्वशी के सामने सिंह, शरभ और चीते आदि सभी हिंसक पशु सदृश बड़े-बड़े योद्धा अपनी हिंसावृत्ति को त्यागकर पालतू हिरन के समान बन जाते हैं।

मैं नाम-गोत्र से रहित पुष्प,
अम्बर में उड़ती हुई मुक्त आनन्द शिखा
इतिवृत्त हीन,
सौन्दर्य चेतना की तरंग;
सुर-नर-किन्नर-गन्धर्व नहीं,
प्रिय! मैं केवल अप्सरा
विश्वनर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्भूत।

1. उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- प्रस्तुत पद्यांश रामधारीसिंह 'दिनकर' द्वारा रचित महाकाव्य 'उर्वशी' से संकलित 'उर्वशी' शीर्षक कविता से उद्धृत है।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या-उर्वशी पुरुरवा से कहती है, हे प्रिय! मैं तो एक साधारण-सी अप्सरा हूँ, जिसका जन्म सांसारिक प्राणियों अथवा ब्रह्म की इच्छाओं के सागर से हुआ है। तात्पर्य यह है कि उर्वशी केवल विहार में ही रुचि रखती है और उसी को महत्त्व देती है।

3. इस पद्यांश में उर्वशी ने किसे अपना परिचय दिया है?

उत्तर- इस पद्यांश में उर्वशी ने पुरूरवा को अपना परिचय दिया है।

4. आकाश में उड़ती हुई स्वच्छन्द आनन्द की शिखा कौन है?

उत्तर- 'उर्वशी' आकाश में उड़ती हुई स्वच्छन्द आनन्द की शिखा है।

5. 'मैं नाम-गोत्र से रहित पुष्प' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है।

उत्तर- उपमा अलंकार है।